4-6-67 102 ओम शान्ति। रात्री क्लास

बाप बच्चों को समझाते है ड्रामा प्लान अनुसार। और कोई समझा नही सकते। जिनको जो पार्ट मिला हुआ है वो ही बजायेगा। बाप को सब याद भी करते है पुजा भी करते है। बेहद के बाप से बेहद का सुख। हद के बाप से हद का सुख मिलता है। सतयुग मे अथाह सुख था। नई दुनियां है नां। बच्चे जानते है कि अब बेहद का बाप मिला है। निश्चय बिगर यहां कोई आ नही सके। कहेंगे कि हम बाप-दादा के पास जाते है। बाप शिव, दादा है ब्रहमा। वर्सा एक से मिलता है। वो एक बाप अनेक बच्चो को वर्सा देते है। यही एक बेहद का बाप स्वर्ग का रचता है। उनसे स्वर्ग का ही वर्सा मिलता है। यहां पर कोई शास्त्र आद नही सुनाये जाते है। नां ही कोई साधु सन्त आद ही है। बाप सच्चा है तो तुम बच्चो से भी सच्ची सर्विस ही करवाते है। तुम सबको स्वर्ग का रस्ता बताते हो। अभी नर्क का दवार बन्द होकर स्वर्ग का दवार खुलता है। सतुयग है स्वर्ग का दवार। कलयुग है नर्क का दवार। स्वर्गवासी ही पुर्नजन्म लेते-2 नर्कवासी बनते है। अब बाप आया है बच्चे जानते है कि बाप जरुर हमको स्वर्गवासी ही बनावेंगे। ब्र, कु, कु भारत को स्वर्ग बना रही ही है। अकेला तो नही करेगा। और बच्चो को भी मददगार बनाते है। गाया जाता है हिम्मते मुरदां मददे बाप। कहते है कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनश्य होंगें। खाद पड़ी हुई है। वो निकल जावेगी। तमोप्रधान से तमो, फिर रजो फिर सतो सतो से फिर सतोप्रधान बनेंगें। फट से सतोप्रधान नही बनेंगें। सीढ़ी चढ़ने मे भी समय लगता है। माया के विघ्न कितने आते है। बाप जो 21 जन्मों का वर्सा देते है उनको तुम भूल जाते हो। हम भाई-बहने अपने तन मन धन से इसमे खर्चा करते है। फिर बाबा से हम सब बदल कर तन मन धन नया लेते है। बाबा जैसाकि करणीगोर है। तुमसे पुराना लेकर नया सब दे देते है। इसलिये उनको दाता कहा जाता है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता। हमको वर्सा पहले लेना है। याद की ताकत से। बेहद का बाप ऐक ही है उनका बनने से बेहद का वर्सा मिलता है। बाप कहते है कोटो मे कोउ पहचानते है, अपने को ही नही जानते है। हम आत्मा कहां से आई है, मै आत्मा कहां से आई हूँ। कैसे पार्ट बजाते है यह किसीको भी पता नही है। तुम अभी जानते हो कि आत्मा बिन्दी है। तुम फखुर रहना चाहिये कि हम यहां नर से नारायण बनने लिये पढ़ रहे है। सच्चे बाप से बेहद की कथा सुनते है। झूठी कथाये तो बहुत सनुते ही आये है। बाबा कोई गीता थोड़ेही रचते है। वो तो पतित से पावन बनाते है। मै गीता नही सुनाता हूँ। राज योग सिखाता हूँ तुम बच्चो को। किसीको कह भी नही सकता हूँ कि यह-2 शास्त्र बनाओ। यह तो खत्म होने है। मनुष्यों ने बहुत शास्त्र आद बैठ बनाये है। बाप तो सैकिंड मे जीवन मुक्ति का वर्सा देते है। बच्चे बने और बाप के वारिस बन गये। स्वर्ग मे जरुर जावेगा। सिर्फ ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ करना है। बाप का परिचय बहुतो को देते दो। बाप कहते है शिवके मन्दिर मे जाकर परिचय दो। यह बाप है। होकर गये है तब तो शिवजयन्ति मनाते हो। तुम बताते हो कि यह शिव जयन्ति 32 3। वीं चली आ रही है। किसीको भी या अक्ल नही है जो पूछे कि यह क्या मनाते हो। यह आप समय कैसे देते हो। समझते ही नही है। प्रदर्शनी मे इतने सब आते है समझते थोड़ेही है। यह भी लिखते हो कि यही 5000 वर्ष पहले भी लिखाई थी तो, सबब रवाना चाहिये नां। तुम समझाते हो कि पुरानी दुनियां का अब विनाश होना है। विनाश होने से पहले अपने को लायक बनाना है तमोप्रधान बन कर राजाई करनी है। भगवानुवाच है कि राजयोग सिखाता हूँ। फिर भी बन्दर बुधी समझ नही सकते है। यां बच्चे पुरा समझा नही सकते है। इतने कुछ से पूछे नां कि इतने क्यूं है क्यो कहलाते है। बाप ब्रहमा दवारा हमको नर्कवासी से स्वर्गवासी बनने लायक बनाते है। हम राजऋषी है। ऋषी है। ऋषी पवित्र रहते है। फिर हम भविष्य 21 जन्मों लिये पवित्र राज्य मे निवास करते है। [illegible] है कि पहले तो पवित्र बन बाप को याद करना है। जितनी याद करेंगे उतनी [illegible] मे [illegible] जावेंगे। फिर विष्णु के गले का हार बनेंगे। [illegible]

प [illegible]